उपसंहार

साहित्य और समाज परस्परावलंबित है । साहित्य हमेशा समाज के साथ चलता है । रचना और रचनाकार दोनों युग के सापेक्ष चलते हैं। रचनाकार हमेशा अपनी रचना के माध्यम से समाज व राष्ट्र आदि को निर्देशित करता है । प्रत्येक युग में साहित्य की महत्ता रही है। साहित्य में समाज की समस्या व सफलताएं प्रतिबिंबित होती हैं । समाज की दृष्टि में दलित, गरीब, अमीर, स्त्री-पुरुष आदि विभिन्न वर्ग हैं । परंतु सभी वर्गों की भावनाएँ साहित्य में एक रूप हो जाती है । साहित्य सभी वर्गों के विचार को समाहित करता है । समाज के इन वर्गों में स्त्री व पुरुष की समानता के लिए साहित्य भी अपनी महती भूमिका अदा करता है । नारी सभी समाज की अनिवार्य घटक है उसके अभाव में किसी भी प्रकार का सर्जन मुश्किल होता है । अतः समाज में नारी सर्जक है । वह रचनाकार है।

स्त्री अस्मिता संबंधी साहित्य रचना के क्रम में वर्तमान में लेखिकाओं का एक समृद्ध युग है । नीरजा माधव का लेखन वर्तमान युग में एक सशक्त लेखन है । डॉ. नीरज माधव भी एक प्रतिष्ठित लेखिका है, नारियों से संबंधित उनके विचार समकालीन लेखिकाओं से निश्चय ही अलग है । डॉ. नीरजाजी नारियों को उनकी संपूर्णता के साथ स्वीकार करती है । नीरजाजी के इस नजरिए का पता मुझे उसे समय चला जब मैंने उनके साहित्य के इतिहास की पुस्तक “हिंदी साहित्य का ओझल नारी इतिहास” का अध्ययन किया जिसमें लेखिकाओं के नजरियों द्वारा लिखे गए साहित्य को तत्कालीन षडयंत्रों द्वारा नजर अंदाज करने की बड़ी बेबाकी से रखी है । उसके बाद से नीरजाजी के उपन्यास व कहानियों का मैंने पाठन किया, जिससे मैं बहुत प्रभावित हुआ और अपने शोध कार्य के विषय के रूप में स्त्री विमर्श व नीरजाजी के कथा साहित्य को चुना । मेरे इस चुनाव को मेरी शोध निर्देशिका डॉ. मनीषा ठक्करजी ने शोध की कसौटी के मानक पर परखकर मान्य कर दिया जिसके लिए मैं सदा उनका आभारी रहूंगा । इनके कथा साहित्य में नारी अस्मिता के पहलू को संवेदनशील तरीके से उठाया गया है । इनका

साहित्य अनछुए विषय व प्रश्नों को उठाता है जो कि अभी तक हिंदी साहित्य में कम ही देखने को मिलते हैं।

प्रस्तुत शोधप्रबंध के प्रथम अध्याय के अंतर्गत स्त्री विमर्श से संबंधित चिंतन को लिया है। जिसका शीर्षक है नारी विमर्श। इसके अंतर्गत विमर्श की अवधारणा व स्वरूप का अध्ययन किया गया है जिसमें पाश्चात्य परिपेक्ष में भारतीय परिप्रेक्ष्य में स्त्रियों के संघर्ष में इतिहास का सिंहावलोकन किया गया है। पाश्चात्य चिंतकों की विचारधारा और तात्कालिक राजनीति के सामाजिक संदर्भ को दर्शाया गया है। साथ ही विभिन्न काल व समय के प्रमुख लेखकों की पुस्तकों की चर्चा की गई है। सामाजिक सोच को प्रभावित करने वाले नेताओं विचारों व संस्थाओं की भी चर्चा की गई है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में स्त्री की अवधारणा में वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक के विविध पड़ाव की चर्चा की है। जिसमें वेदों में नारियों को किस तरह दिखाया गया है उसकी भी चर्चा है। उसके बाद मध्यकाल में नारियों की विपनंता की बात उठाई गई है। अंग्रेजी शासन में नारी की स्थिति कैसी थी , अंग्रेजों व भारतीय महानुभावों के सहयोग से स्त्रियों से संबंधित विभिन्न प्रथाओं व सामाजिक चुनौतियों को प्रतिबिंबित किया गया है। स्वामी विवेकानंद, दयानंद सरस्वती, राजा राममोहनराय आदि की चर्चा की है। नारी उन्नति के लिए संघर्ष करने वाले ज्योतिबा फुले व प्रथम शिक्षिका सावित्रीबाई फुले के संघर्षों को इंगित किया है। स्वतंत्र भारत में नारियों की स्थिति व विधान निर्माण के बाद स्त्रियों की दशा व दिशा में होने वाले सुधारों का अध्ययन किया है। संविधान में ऑडिट अनुच्छेद 14, 15, 16 में नारी उन्नति के लिए जो प्रावधान किए गए हैं उसका वर्णन किया गया है। इस अध्याय में सबसे महत्वपूर्ण बात है स्त्री चिंतन के मूल बिंदु। इस भाग में स्त्री चिंतन के विभिन्न पहलुओं पर विचार दिया गया है। नारी के जीवन यापन में उसकी जिंदगी के कई पड़ाव आते हैं उसमें स्त्रियों की समानता असमानता के अधिकार व अस्मिता की बात विभिन्न पहलुओं के अंतर्गत की गई है। जैसे प्रथम में पितृ सत्तात्मक व्यवस्था इसमें पुरुषों पर सदियों से चली आ रही रुढिवादी मानसिकता का अवलोकन किया गया है। जो पुरुषों के

नजरियों को स्पष्ट रूप से प्रभावित करती है साथ ही साथ पितृ सत्ता की मानसिकता स्त्री पर भी रहती है जिससे स्त्रियों के द्वारा ही स्त्रियों को बाधा पहुंचती है। दूसरे पहलू में धर्म के मुद्दे को उठाया गया है, यह दर्शाया गया है कि धर्म कोई भी हो स्त्रियों का हर धर्म में शोषण होता है। कुछ धर्म में तो नारियों की स्थिति बहुत ही खराब भी है।

तृतीय पहलू के तहत लिंग के भेदभाव को लिया है। चतुर्थ पहलू में स्त्री पुरुष के श्रम विभाजन की बात उठाई गई है , साथ ही समान कार्य समान वेतन की समस्या को दिखाया गया है। पांचवें पहलू के रूप में स्त्रियों की मातृत्व क्षमता के विभिन्न बिंदु की चर्चा की गई है। छठे बिंदु के रूप में स्त्रियों के शरीर को लेकर जो अवधारणा बनी है समाज में उससे मुक्ति पाने की समस्या को समाहित किया गया है।

इस शोधप्रबंध के द्वितीय अध्याय के अंतर्गत डॉ. नीरजा माधवजी के जन्म व परिवार की बात की गई है। उनके माता-पिता का परिचय दिया गया है। नीरजाजी स्वयं मानती हैं कि उनके व्यक्तित्व व शिक्षा पर उनके पिताजी का अधिक प्रभाव है। पिता को रेडियो से बहुत लगाव था, वह चाहते थे कि उनके घर का कोई रेडियो में कार्य करें। जब नीरजजी की नौकरी आकाशवाणी वाराणसी में लगी तो पिताजी को बहुत खुशी हुई। लेखिका को प्राप्त सम्मान व पुरस्कारों की भी संक्षिप्त सूची दी है। व्यक्तित्व में बचपन आदि के बाद लेखिका के रचना संसार का परिचय दिया गया है। इस क्रम में सर्वप्रथम उनके चार कविता संग्रह का परिचय दिया गया है। उसके बाद उनके कहानीसंग्रहों को क्रमशः चिटके आकाश का सूरज, अभी ठहरो अन्धी सदी, आदिमगंध तथा अन्य कहानियाँ , पथदंश, वाया पांडेपुर चौराहा, पत्थरबाज आदि का परिचय दिया गया है। कहानियों के बाद नीरजाजी के उपन्यासों का परिचय दिया गया है। इसमें यमदीप, तेभ्यः स्वधा, गेशेजम्पा, अवर्ण महिला कान्स्टेबल की डायरी, रात्रीकालीन संसद आदि का विस्तार से परिचय दिया गया है।

अगले क्रम में लेखिका के द्वारा लिखे गए निबंधों का परिचय दिया गया है। तीन निबंध संग्रह हैं प्रथम चैन चित्त मन महुआ, सांझी फूलन चीति, यह राम कौन है ?

उसके बाद नीरजा माधवजी की रचनाएँ जो अलग-अलग संस्थाओं के पाठ्यक्रम में शामिल की गई है उनका संक्षिप्त विवरण दिया गया है। नीरजाजी प्रकाशन कार्य भी करती हैं और रचनाओं के परिचय क्रम में लेखिका के अन्य रचनाओं की सूची दी गई है। तृतीय अध्याय के अंत में नीरजाजी के समकालीन लेखिकाओं उनकी रचनाओं की गंभीरता का अध्ययन व मूल्यांकन किया गया है।

मूलरुप से इस शोधप्रबंध के द्वितीय अध्याय नीरजा माधव का व्यक्तित्व एवं कृतित्व है। इसमें इसमें नीरजा जी का विस्तृत जीवन परिचय, अभिरुचि एवं व्यक्तित्व के विश्लेषण के साथ-साथ उनकी संपूर्ण साहित्य कृतियों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। साथ ही नीरजा जी को प्राप्त होने वाले पुरस्कारों की भी चर्चा की गई है। उनके द्वारा रचित कई कहानी उपन्यास आदि विभिन्न संस्थाओं के पाठ्यक्रम में शामिल होने की सूचना दी गई है।

तीसरे अध्याय के अंतर्गत नीरजा माधव के कथा साहित्य में नारी पात्रों का परिचय दिया गया है। जिसमें नीरजा माधव के सभी कहानी संग्रह का अध्ययन करके 15 कहानी को खी विमर्श के संदर्भ में चिन्हित करके उसमें स्त्री पात्रों का परिचय प्रस्तुत किया गया है। इन पात्रों में प्रमुख कामकाजी नायिका नैना, विद्योतमा, गरीब नायिका चन्तारा,मुक्ता, खिलाड़ी नायिका निहारिका, लेखिका नायिका हरीतिमा, सुदेशना एवं गृहिणी रेनू, संध्या और इसके अलावा समाज के अलग-अलग वर्ग की अंजना, सविता, भारती, सीमा, कमली आदि नायिकाओं का परिचय दिया गया है। इसी अध्याय में उनके साथ उपन्यासों के अलग-अलग समाज से संबंधित नारी पात्रों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। इसमें मीना, भवप्रीता, देवयानी, फुलझड़ी, लोहे, अमोदिनी, मानसी आदि हैं। इस अध्यायमें मूलरूप से 15 कहानियों व उपन्यासों के स्त्रीपात्रों का विस्तार से परिचय दिया गया है।

चतुर्थ अध्याय नीरजा माधव की कहानियों में नारी विमर्श है । इसमें लेखिका की कहानियों में स्त्री पात्रों के जीवन का विवरण दिया गया है। इसमें नीरजाजी ने दिखाया है कि समाज के अलग-अलग वर्ग में महिलाएँ किस तरह पितृसत्ता के कारण प्रताड़ित होती हैं। उस प्रताडनाओं के प्रतिकार को भी लेखिका ने अपने साहित्य के माध्यम से दिखाने का प्रयास किया है।

उस के प्रथम पाठ में चंतारा जो की एक मजदूर है । चंतारा के माध्यम से लेखिकाने गरीब महिलाओं के संघर्ष को दिखाया है। स्त्री विमर्श की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण कहानी है शीर्षक क्या दूं ? इस कहानी में विभिन्न पात्रों के माध्यम से भारतीय व पाश्चात्य स्त्रियों की सोच को प्रतिबिंबित किया गया है। शिक्षित लड़की का प्रतिनिधित्व करनेवाली विद्योतमा के प्रति समाज की मानसिकता दिखाने के लिए लेखिका ने "उष्ट्र उष्ट्र ही सही" कहानी को लिखा है। नैना का संघर्ष कार्यालय में काम करने वाली स्त्रियों की परेशानी को दिखाता है। तीसरी कहानी की नायिका कमली है जो समाज की पितृसत्तात्मक मानसिकता का शिकार हो जाती है। तूफान आने वाला है कहानी में नायिका अपनी मां पर हुए अन्याय से सबक लेती है। इसी तरह जो की सभी लड़कियों को संकल्प लेना चाहिए । नीरजाजी की सभी कहानी के पात्र अलग-अलग समाज का प्रतिनिधित्व करते हैं।

तदुपरांत पंचम अध्याय में नीरजा माधव के उपन्यास में स्त्री विमर्श के अंतर्गत नीरजाजी के सात प्रमुख उपन्यासों में स्त्री पात्रों के जीवनकाल में होने वाली प्रताड़ना, समाज की मानसिकता आदि से संबंधित नारीयों के अध्ययन को विषय बनाया गया है । विभिन्न सामाजिक वर्ग की महिलाएँ अपने जीवन में कैसे-कैसे तिरस्कार व अपमान सहती हैं । एवं उनका प्रतिकार कर अपने अस्तित्व को उजागर करती हैं वह बताया है। उन्होंने वैश्विक स्तर पर स्त्रियों पर होनेवाले अत्याचार को उजागर करने के लिए गेशेजम्पा व तिब्बत की डायरी उपन्यास की रचना की है। अनछुए विषयों में उनका उपन्यास ईहामृग है। इसमें नीरजाजी ने विदेशी व भारतीय संस्कृत के मूल्यों का तुलनात्मक संदर्भ दिखाया है। दोनों की मानसिकता

को स्पष्टरूप से दर्शाया है। देश में होने वाले दंगों आतंकी हमले आदि बड़ी घटनाओं से सबसे ज्यादा प्रभावित होती है महिलाएँ। इनका सांकेतिक रूप तेभ्यः स्वधा की मीना के रूप में देखने को मिलता है। एक दलित स्त्री के संघर्ष को लेकर ने भवप्रीता के माध्यम से दिखाया है। यमदीप एक संवेदनात्मक उपन्यास है इसमें पुरुषवादी मानसिकता से स्त्रियों को होने वाली समस्या को दिखाया गया है। रात्रिकालीन संसद के माध्यम से लेखिका ने नारियों की आधुनिक समस्या को उठाया है , जिसमें लव-जिहाद व पुरुषों की विलासिता पूर्ण नजरिये के खिलाफ नारी के संघर्ष को दिखाया गया है। इस अध्याय में कुल सात उपन्यासों के माध्यम से लेखिका के द्वारा रखे गए नारी पात्रों के संघर्ष को प्रस्तुत किया गया है।

अपने अंतिम व छठे अध्याय में मैंने नीरजा माधव के कथा साहित्य में शिल्प का अध्ययन किया है। इसमें भाषागत अध्ययन के अंतर्गत उनके कथा साहित्य में मिले तत्सम शब्दों का कहानियां व उपन्यासों में प्राप्त सूची को दिया है अलग- अलग रचनाओं में पात्रों द्वारा बोले जाने वाली शब्दों जैसे अंग्रेजी आदि की सूची प्रस्तुत की गई है। पात्रानुकूल भाषा में लेखिका ने उर्दू, अरबी, फारसी आदि शब्दों का जो प्रयोग दिखाया गया है। भाषा के परिचय के अंतर्गत लेखिका द्वारा प्रयोग किए गए स्थानीय भाषा, अवधी भोजपुरी आदि के शब्दों का व कहावतें, मुहावरों के अर्थ सहित सूची दी गई है। उसके बाद शिल्प के अंतर्गत दूसरे क्रम में लेखिका के भाषिक प्रयोगों को ध्यान में रखकर उनकी रचनाओं की बुनावट की व्याख्या की गई है। इसमें विभिन्न सूचियों का प्रयोग, सूक्तियों का प्रयोग, कहावत व मुहावरे का संक्षिप्त प्रयोग, प्रसंगानुकूल गीत, लोकगीत व जगह- जगह काव्यपंक्तियों का प्रयोग दिखाया है। और अंत में डॉ. नीरजा माधव के कथा साहित्य में प्रयोग की गई लेखन शैली की बात प्रस्तुत की गई है। जिसमें लेखिका के द्वारा प्रयोग किए गए पूर्वदीप्ति शैली के साथ- साथ वर्णनात्मक शैली, पत्रात्मक शैली, आत्मकथनात्मक शैली का विस्तार से उदाहरण सहित अध्ययन किया गया है और उपन्यास लेखन की विविध शैली का उदाहरण के साथ विवेचन किया है।

यह शोध प्रबंध प्रस्तुत करते हुए मेरी कोशिश यह रही कि शोध विषय से संबंधित जो भी अध्ययन और अनुसंधान हैं उसे इस प्रबंध में सफलतापूर्वक प्रस्तुत कर सकूं। जिसमें मेरा यह शोध प्रबंध उच्चस्तरीय और लोकोपयोगी हो।

प्रस्तुत शोधप्रबन्ध में हमारे निष्कर्ष व स्थापना इस प्रकार है।

डॉ. नीरजा माधवजी के लेखन का प्रारम्भ कविताओं से हुआ है। अपने अध्ययन काल में वे छोटी छोटी कविताएँ लिखा करती थी जो कि बाद में उनकी कविता संग्रह में छपी है। लेखिकाने अपने लेखन की शुरुआत भले ही कविता से की परंतु अवकाश पत्रिकामें उनके लेख सर्वप्रथम छपे थे। नीरजाजी सभी विधाओं में सहजढंग से लेखन करती है परंतु उनके कहानी संग्रह व उपन्यासों की संख्या ज्यादा है। उनकी गद्य रचनाओं में ज्यादातर कहानियों के प्रसंग में सामान्यवर्ग के जनमामस की बात दिखाई देती है। उनकी संवेदना से पोषित है। पात्र के अनुकुल शब्दावली उनकी आंचलिकता में कहानी का तानाबाना है। शब्दावली या भाषा भी उसी के अनूकुल है। मूलरुप से उनके कथासाहित्य में स्त्रीयों की जो तस्वीर मिलती है वह पाश्चात्य विचारों से अलग भारतीय सभ्यता व संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती है। उनके स्त्रीपात्र विदेशी परम्परा का अंधानुकरण नहीं करतें है, यदि मूलरूप से कहा जाये तो नीरजा माधव के कथा साहित्य के नारी पात्र भारतीयपरिप्रेक्ष्य के है। सिर्फ नारीपात्र ही नहीं बल्कि उनके पुरुषपात्र भी स्त्री को अपना प्रतिद्वंदी नहीं मानते हैं। पुरुष चाहे पति, भाई, पिता, बेटा किसी भी रुप में हो स्त्रीयों की अस्मिता का सम्मान करता हुआ ही दिखाई देता है। और चाहे आर्थिकरुप से सम्पन्न न हो तब भी वह पुरुष के साथ रहना अपना कर्तव्य समझती है। पुरुष के प्रति कोई दुर्भाव नहीं रखती है।

शोध प्रबंध के प्रथम अध्याय में नारी विमर्श के अर्थ व अवधारणा के बाद भारतीय व पश्चात् संदर्भो में नारी के गौरवशाली इतिहास को दिखाया है। प्रथम अध्याय का सबसे महत्वपूर्ण बिंदु जिनके मानक पर हम स्त्रियों की उन्नति को देख सकते हैं। द्वितीय अध्याय में लेखिका के व्यक्तित्व कृतित्व को विस्तार पूर्वक अध्ययन किया गया है। तृतीय अध्याय के

अंतर्गत मैं शोध शीर्षक से संबंधित चुनिंदा 15 कहानियां 17 उपन्यासों में वर्णित नारी पात्रों का विस्तार पूर्वक परिचय दिया है। चतुर्थ अध्याय के अंतर्गत चुनिंदा 15 कहानियों में स्त्री पात्रों के संघर्ष व उनकी चेतना को दिखाया है जो कि आज के समाज के लिए निश्चय ही एक प्रेरणादायी है। ठीक इसी प्रकार उपन्यासों में नारी पात्रों के जीवन के माध्यम से समाज के सभी वर्गों की स्त्रियों के प्रतीक रूप में उनके द्वारा किए जा रहे पितृ सत्ता की मानसिकता के खिलाफ संघर्ष के विविध रूप हैं। उन्हीं नारियों के संघर्ष के धरातल जैसे के तेभ्यः स्वधा की मीना, भारत पाक विभाजन, भवप्रीता एक दलित सरकारी नौकर, यमदीप उपन्यास में नायिका मानवी पत्रकार है। वैश्विक स्तर पर स्त्रियों की आवाज के रूप में देनपा, गेशेजम्पा, इहामृग जैसे उपन्यासों की नारी पात्रों का प्रतिनिधित्व करती हैं। रात्रिकालीन संसद उपन्यास जो कि ज्यादातर बातचीत के प्रसंग पर लिखा गया है उसमें नारी के आधुनिकशोषण के तरीके कई बिंदुओं को प्रतिबिंबित करती है। छठे और अंतिम अध्याय के अंतर्गत लेखिका के कथा साहित्य शिल्प को प्रतिबिंबित किया है। डॉ. नीरजा माधव की भाषा सरल सहज भावानूकुल पात्र के स्तर की रही है। इसमें स्थाई भाषा के लिए ग्रामीण लोकगीत, पात्र के अनुसार संस्कृत के श्लोक, मंत्र आदि काव्यपंक्तियां भी मिल जाती हैं। इस अध्याय में रचनाकार के द्वारा उपयोग किए गए तद्भव तत्सम, कहावत, मुहावरे और उनकी लेखनशैली जिसमें पाठकों के हृदय में रचनाकार हमेशा समाहित रहा।

नीरजाजी का संपूर्ण साहित्य एक ज्ञान रश्मि की निधि जैसा है। उनके साहित्य की विविधता की बात करें तो समाज के सभी वर्गों की संवेदनाओं का वहन करते हैं। चाहे स्त्री पुरुष तृतीय लिंग विभाजन, विस्थापन आदि से संबंधित विविध आयाम मिलते हैं। उनकी कथा साहित्य में अध्ययन व शोध की अपार संभावनाएं हैं। लेखिका की जो अभिव्यक्ति की शैली है वह अनुपम है। निश्चित शब्दावली में बड़ी-बड़ी बातों को प्रस्तुत करना डॉ. नीरजा माधव का सर्वेदुर्लभ गुण है। उनकी संपूर्ण रचनाओं का वस्तु और परिप्रेक्ष्य बहुआयामी है। इनके कई अछूते विषय को लेकर कार्य हो सकता है जो की निश्चय ही साहित्य जगत के लिए

महत्वपूर्ण होगा। मैंने अपने शोध में बहुत सतर्कता के साथ कार्य किया है फिर भी मैं अपनी त्रुटियों के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ।